Daily Gospel Reflections in Hindi

20 July 2019

योहन 7:14-24

DO NOT JUDGE BY APPEARANCES

आज का सुसमाचार पाठ का 19 से 24 तक का भाग हकीकत में पांचवाँ अध्याय का अंतिम हिस्सा है। यह किसी अज्ञात कारणों से सातवें अध्याय के बीच में आ पड़ा है। येरुसालेम के बेथेस्ता में प्रभु ने अडतीस सालों से बीमार एक व्यक्ति को चंगा करते है (Jn.5:1-15)। और वह एक विश्राम के दिन था। इसलिए यहूदी प्रभु से चिड़ गये। येसु का तर्क था – ''मेरे पिता अब तक काम कर रहा है और मैं भी काम कर रहा हूँ'' (Jn. 5:17)। पर, यह तर्क यहूदियों को नागवार गुजरा। क्योंकि इससे प्रभु येसु अपने आप को पिता ईश्वर से तुलना करते है और यहूदी यह कभी बर्दाश्त नहीं करते। यहूदियों के विश्वास के अनुसार सातवें दिन इसलिए विश्राम का दिन घोषित किया गया क्योंकि, ''छः दिनों में प्रभु ने आकाश, पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ है, वह सब बनाया है और उसने सातवें दिन विश्राम किया'' (Ex. 20:11)। लेकिन यह तो पुरोहितों का तर्क है जो कई सदियों बाद जब पुरोहित वर्ग सशक्त हो गये थे (Priestly Tradition - 5th century BCE)।

जब मूसा सातवें दिन को विश्राम के दिन घोषित किया था, वह सामाजिक कारणों से था। ''छः दिन तक अपना काम करो और सातवें दिन विश्राम दिवस मनाओ, जिससे तुम्हारे बैल और तुम्हारे गधे को विश्राम मिले, तुम्हारे दासी–पुत्र और प्रवासी भी आराम कर सकें'' (Ex.23:12)। और यही बात Ex. 34:21 में भी पाई जाती है। गौरतलब है कि इन दोनों में ईश्वर सातवें दिन विश्राम करने का जिक्र नहीं है (Y या E tratdition के हो सकते है 950-900 BCE)।

अपने इस चमत्कार (Jn. 5:1-15) द्वारा प्रभु याजक वर्ग के प्रभाव को चुनौती देते हैं। प्रभु कहते है कि विश्राम के दिन पुरोहित, लोगों के खतना करते है। हालांकि खतना, न ही दस आज्ञाओं का हिस्सा है, और न ही मूसा का आदेश है। खतना तो मात्र पूर्वजों से चली आ रही मात्र एक प्रथा है। अगर उस के लिए विश्राम के नियम तोड़ सकते है, तो किसी को स्वस्थ करना जायज है। ''विश्राम के दिन भलाई करने की आज्ञा है'' (Mt. 12:12)। यह कहकर प्रभु में विश्राम के दिन सूखे हाथ वाले को चंगा किया था।

वास्तव में प्रभु मात्र अपना मिशन पूरा कर रहे थे जो पिता ईश्वर ने उन्हें सौंपे थे। ''उसने मुझे भेजा है, जिससे.... बंदियों को मुक्त करूँ...'' (Lk. 4:18)। अडतीस सालों से वह किसी बीमारी के बंधन में था। उसे प्रभु ने छुड़ाया। हमें भी चाहिए कि हम कानून–पालन के प्रति रूढ़िवादी न बने; बल्कि,दूसरों की भलाई करते रहें।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019